Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2021 GISRRJ | Volume 4 | Issue 1 | ISSN : 2582-0095

पौराणिक वैवस्वत मनु वंश

डॉ. आरती यादव
असिस्टेंट प्रोफ़ेसर, संस्कृत – विभाग,
चौ. चरण सिंह पी. जी. कॉलेज हेंवरा सैफ़ई, इटावा, उत्तर प्रदेश, भारत।

Article Info
Volume 4 Issue 1
Page Number: 88-100
Publication Issue :
January-February-2021
Article History
Accepted : 02 Feb 2021
Published :15 Feb 2021

सारांश– भागवत, मार्कण्डेय, मत्स्य, पद्म आदि पुराणों में भी वैवस्वत मनु वंश का विस्तृत विवरण प्राप्त होता है, जो इस वंश की महत्ता को सिद्ध करता है। पुराणों में चौदह मन्वन्तरों में स्वायभुव मनु वंश और वैवस्वत मनु का ही विस्तृत विवेचन किया गया है। यदि सभी पुराणों को मिलाकर मनु वंश की एक वंशावली बनायी जाय तो यह काफी उपयोगी सिद्ध हो सकती है।

मुख्यशब्द– वैवस्वत, मनु, वंश, मार्कण्डेय, मत्स्य, पद्म, पौराणिक।

पुराणों में जितने वंशों का वर्णन प्राप्त होता है उन सबका प्रारम्भ 'मनु' से हुआ है। मनु की सन्तति होने से ही सब मनुष्य 'मानव' कहलाते है। पुराणों में १४ मनुओं का उल्लेख है। जो अलग-अलग मन्वन्तरों के अधिष्ठाता हैं। लगभग सभी पुराणों में मन्वन्तरों के नाम समान ही मिलते हैं। ये १४ मनु इस प्रकार है- १.स्वायम्भुव २.स्वरोचिष ३.उत्तम ४. तामस ५. रैवत ६. चाक्षुष ७. वैवस्वत ८. सावर्ण्य ९.दक्षसावर्णि १०.ब्रह्मसावर्णि ११.धर्मसावर्णि १२. रूद्रसावर्णि १३. रौच्य १४. भीम इसमें ऊपर के छ: मनु बीत चुके हैं। इस समय वैवस्वत मनु वर्तमान है। पुराणों में वैवस्वत मनु वंश का वर्णन विस्तारपूर्वक किया गया है। इसलिए मनुओं में वैवस्वत मनु वंश का वर्णन पौराणिक इतिहास का मेरूदण्ड कहा जाता है।

विवस्वान् के पुत्र होने के कारण इनका नाम वैवस्वत पड़ा। विवस्वान् मार्तण्ड सूर्य का नाम है। इनका विवाह विश्वकर्मा की पुत्री संज्ञा देवी से हुआ था। इन्हीं से वैवस्वत मनु उत्पन्न हुए। मार्कण्डेय पुराण में कहा गया है-

मार्तण्डस्य रवेभार्या तनया विश्वकर्मण:।
संज्ञा नाम महाभाग तस्यां भानुरजीजनत्।।
मनु प्रख्यातयश्समनेक ज्ञान पारगम्।
विवस्वत: सुतो यस्मात्तस्माद्वैवस्वतमस्तुरा:।।

वैवस्वत मनु सूर्य वंश के प्रथम राजा थे इन्हीं से चन्द्र एवं सौद्यम्न वंश भी चला। वैवस्वत मनु के नौ पुत्र और एक कन्या थी जिसका नाम 'इला' था। पुराणों में कहा गया है वैवस्वत मनु पुत्र प्राप्ति की इच्छा से मित्रावरूण नामक यज्ञ कर रहे थे। उन्होनें यज्ञ में जैसे ही यज्ञाहुति डाली उसमें से एक सुन्दर वस्त्रों से सुसज्जित कन्या प्रकट

Copyright : © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

हुई जिसे मनु ने 'इला' कहकर सम्बोधित किया और अपने पास बुलाया लेकिन इला ने कहा कि वह मित्रावरूण के अंश से उत्पन्न हुई है इसलिए वह सर्वप्रथम उन्हीं के पास जायेगी। वहां पहुचने पर मित्रावरूण उसके धर्म, संयम से बहुत प्रसन्न हुए और बोले कि तुम हम दोनों (मित्रावरूण और मनु) की पुत्री के रूप में प्रसिद्ध होगी और तुम्हीं मनु के वंश का विस्तार करने वाला पुत्र हो जाओगी। और उस समय तुम तीनों लोकों में सुद्यम्न के नाम से प्रसिद्धि प्राप्त करोगी। वहां से लौटते समय मार्ग में बुध के संयोग से उसने पुरूरवा को जन्म दिया। इसके बाद वह सुद्यम्न के रूप में परिणत हो गई। सुद्यम्न के तीन पुत्र हुए उत्कल,गय,और विनताश्व। मनु के नौ पुत्र इस प्रकार हैं – १. इक्ष्वाकु २. नाभाग ३. धृष्ट ४. शर्याति ५.नरिष्यन्त ६. विष्ठ ७.करूष ८. पृषध्र ९.वसुमान

जब वैवस्वत मनु सूर्य के तेज में प्रवेश करने लगे तो उन्होंने अपने राज्य को दस भागों में बांट दिया क्योंकि सुद्यम्न कन्या थी इसलिए उसे राज्य का भाग प्राप्त नहीं हुआ लेकिन वसिष्ठ जी के कहने से प्रतिष्ठानपुर का राज्य उसे मिला, जिसे सुद्यम्न ने अपने पुत्र पुरूरवा को दे दिया। सुद्यम्न के बाद मनु के सबसे बड़े पुत्र **इक्ष्वाकु** थे। इन्होंने मध्य देश का राज्य प्राप्त किया। इन्हीं से सूर्यवंश चला। इनकी राजधानी अयोध्या थी।

नाभानेदिष्ट नामक पुत्र ने वैशाली में शासन किया।

करुष का राज्य बिहार के दक्षिण पश्चिम तथा रीवां के पूर्व सोनपद के तट पर था।

धृष्ट का अधिकार पूर्वी पंजाब पर था।

नाभाग ने यमुना नदी के दक्षिण तट पर एक राज्य की स्थापना की।

शर्याति का राज्य आनर्त देश (उत्तर सौराष्ट्र) में विस्तृत था।

नरिष्यन्त के वंशज भारतवर्ष के बाहर मध्यएशिया तक चले गये और वहां 'शक' नाम से प्रसिद्ध हुए।

पृषध्र अपने गुरू च्यवन की गाय का वध करने के कारण शूद्र हो गया। उसका वंश नहीं चला।

प्रांशु के बारे में कोई विशेष विवरण प्राप्त नहीं होता है।

अग्नि पुराण में वर्णित वैवस्वत मनु वंश-

अग्निपुराण में मन्वन्तरों के वर्णन क्रम में १५०वें अध्याय में वैवस्वत मनु का वर्णन किया गया है। जैसा कि ऊपर बताया गया है कि प्रत्येक मन्वन्तर के मनु देवता, मनुपुत्र, इन्द्र, सप्तर्षि भगवान के अंशावतार पुराणों में बताये गये हैं। अग्नि पुराण में सातवें मनु को वैवस्वत मनु कहा गया है। अग्नि पुराण में इस मन्वन्तर के **देवता** आदित्य, वसु,तथा रुद्र आदि बताये गये है। इस मन्वन्तर के **इन्द्र** पुरन्दर हैं। वसिष्ठ, काश्यप, अत्रि,जमदाग्नि,गौतम, विश्वामित्र तथा भारद्वाज **सप्तर्षि** हैं। यह वर्तमान मन्वन्तर है।

तत्पश्चात् **दो सौ तिहत्तरवें** अध्याय में सूर्यवंश वर्णन के क्रम में वैवस्वत मनु वंश का वर्णन किया गया है क्योंकि वैवस्वत सूर्य के पुत्र थे इसलिए इनके वंश को सूर्य वंश कहा जाता है । इस पुराण में अग्निदेव वशिष्ठ जी से कहते हैं कि भगवान विष्णु के नाभिकमल से ब्रह्माजी प्रकट हुए। इनके पुत्र मरीचि थे। मरीचि से कश्यप विवस्वान (सूर्य) का जन्म हुआ। इनकी तीन पत्नियां थी। संज्ञा, राज्ञी, और प्रभा। इनमें से राज्ञी रैवत की पुत्री थीं उन्होनें रेवन्त नामक पुत्र को जन्म दिया। दूसरी पत्नी प्रभा से प्रभात नामक पुत्र उत्पन्न हुआ। संज्ञा विश्वकर्मा

की पुत्री हैं इनके गर्भ से वैवस्वत मनु तथा जुड़वी संतानें यम तथा यमुना की उत्पत्ति हुई।[1] वैवस्वत मनु के दस पुत्र हुये कुछ अन्य पुराणों में नौ पुत्रों का वर्णन प्राप्त होता है। ये दस पुत्र इस प्रकार है- इक्ष्वाकु, नाभाग, धृष्ट, शर्याति, नरिष्यन्त, प्रांशु, नृग, दिष्ट, करूष, पृषध।[2] ये दसों महाबली राजा अयोध्या में हुये। मनु की एक कन्या भी थी जिसका नाम इला था। इनके पुत्र का नाम पुरूरवा था। पुरूरवा को उत्पन्न करने के बाद इला पुरूष रूप में परिणत हो गई। उस समय उसका नाम सुद्यम्न था। सुद्यम्न से उत्कल, गय, और विनताश्व नामक तीन पुत्र हुए। उत्कल को उत्कल नामक प्रान्त मिला। विनताश्व का अधिकार पश्चिम दिशा पर था। गय पूर्व दिशा के राजा हुए जिनकी राजधानी गयापुरी थी।[3]

१. मनु पुत्र **नरिष्यन्त** के पुत्र शक हुए।

२. **नाभाग** के पुत्र अम्बरीष थे।

३. **धृष्ट** से धार्ष्टक नामक क्षत्रिय उत्पन्न हुए।[4]

४. **शर्याति** की दो संतानें हुईं सुकन्या नामक कन्या और आनर्त नामक पुत्र।

↓

आनर्त से रेव (आनर्त देश में राज्य करते थे इसकी राजधानी कुशस्थली थी)

↓

१०० पुत्र जिसमें रैवत सबसे बड़ा(ककुद्मी नाम से भी प्रसिद्ध)।[5]

५. **करूष** के पुत्र कारूष नामक क्षत्रिय हुए।

६. **पृषध्र** ने अपने गुरू की गाय का वध कर दिया था। अत:वे शापवश शूद्र हो गये।[6]

७. इक्ष्वाकु के पुत्र विकुक्षि थे। इनके ककुत्स्थ नामक पुत्र हुआ।

↓

[1] सूर्यवंशं सोमवंशं राज्ञां वंश वदामि ते।
हरेर्ब्रह्मा पद्मगोऽभून्मरीचिर्ब्रह्मण:सुत:।।
मरीचे: कश्यपस्तस्माद्विवस्वांस्तस्यपत्न्यपि।
संज्ञा राज्ञी प्रभा तिस्त्रो राज्ञी रैवतपुत्रिका।।
रेवन्तं सुषुवे पुत्रं प्रभातश्च प्रभा रवे।
त्वाष्ट्री संज्ञा मनुं पुत्रं यमलौ यमुनां यमम्॥ अग्नि पुराण २७२/ १-३

[2] मनोर्वैवस्वतस्यासन् पुत्रा वै न च तत्समा:।
इक्ष्वाकुश्चैव नाभागो धृष्ट: शर्यातिरेव च॥
नरिष्यन्तस्तथा प्रांशुर्नाभागादिष्टसत्तमा:।
करुषश्च पृषध्रश्च अयोध्यायां महाबला:॥ अग्नि पुराण २७२/ ५-६

[3] अग्नि पुराण २७२/८-९

[4] नरिष्यत: शका: पुत्रा नाभागस्य च वैष्णव:।
अम्बरीष: प्रजापालो धार्ष्टकं धृष्टत: कुलं॥ -अग्निपुराण २७२/ १०-११

[5] अग्नि पुराण २७२/११-१२

[6] अग्नि पुराण २७२/१७-१८

सुयोधन → पृथु → विश्वगश्व[7] → आर्द्र → युवनाश्व → श्रावस्त (इसने श्रावन्तिकी नामक पुरी बसायी) → वृहदश्व → कुवलाश्व (धुन्धु नामक दैत्य का वध करने के कारण धुन्धमार भी कहलाता है।) → दृढाश्व, दण्ड, कपिल

दृढाश्व के हर्यश्व और प्रमोदक हुए।[8] हर्यश्व के → निकुम्भ → संहताश्व → अकृशाश्व, रणाश्व[9]

युवनाश्व → मान्धाता → पुरूकुत्स, मुचुकुन्द → त्रसदस्यु(सम्भूत दूसरा नाम) →

सुन्धवा → त्रिन्धवा → तरूण → सत्यव्रत → सत्यरथ → हरिश्चन्द्र → रोहित → वृक → बाहु → सगर (इनकी पहली पत्नी प्रभा से ६० हजार पुत्र और दूसरी पत्नी भानुमती से असमञ्जस उत्पन्न हुए।[10]

दिलीप → भगीरथ → नाभाग → अम्बरीष → सिन्धुद्वीप → क्षुताय → ऋतुपर्ण → कल्माषपाद → सर्वाकर्मा → अनुरण्य → निघ्न → दिलीप → रघु → अज → दशरथ → राम[11] → अंशुमान → कुश,लव

[7] मनुपुत्रादथेक्ष्वाकोर्विकुक्षिर्देवराडभूत्॥
विकुक्षेस्तु ककुत्स्थोऽभूत्तस्य पुत्र: सुयोधन:। -अग्निपुराण २७२/१८-१९

[8] अग्नि पुराण २७२/२०-२२

[9] हर्यश्वाश्च निकुम्भोऽभूत् संहताश्वो निकुम्भत:।
अकृशाश्वो रणाश्वश्च संहताश्वसुतावुभौ॥ -अग्निपुराण २७२/२३

[10] अग्निपुराण २७२/२४-२८

[11] अग्निपुराण २७२/२९-३५

अतिथि → निषध → नल → नभ → पुण्डरीक → क्षेमधन्वा → देवानीक → अहीनाश्व → सहस्त्राश्व → चन्द्रलोक → तारापीड → चन्द्रगिरि → भानुस्थ → श्रुतायु[12] → → →

सोम वंश-

सोमवंश वैवस्वत मनु की पुत्री इला से प्रारम्भ होता है। अग्नि पुराण के २७३वें अध्याय में सोमवंश का वर्णन किया गया है। इसमें कहा गया है कि विष्णु के नाभि कमल से ब्रह्मा जी उत्पन्न हुए। ब्रह्मा से अत्रि उत्पन्न हुए। अत्रि से सोम और सोम से बुध। बुध और इला से पुरुरवा की उत्पत्ति हुई।[13] पुरुरवा के आठ पुत्र हुए – आयु, दृढायु, अश्वायु, धनायु, धृतमान, वसु, दिविजात और शतायु।[14]

आयु के पांच पुत्र हुए - नहुष,वृद्धशर्मा, रजि, दम्भ और विपाप्पा।

सौ पुत्र हुए जो राजेय के नाम से प्रसिद्ध हुए।[15]

नहुष के सात पुत्र हुए – यति, ययाति, उत्तम, उद्धव, पञ्चक, शर्याति और मेघपालक। ययाति की एक पत्नी देवयानी से यदु, तुर्वसु उत्पन्न हुए एवं दूसरी पत्नी शर्मिष्ठा से द्रुह्यु, अनु, पुरु उत्पन्न हुए।[16]

यदु के पांच पुत्र हुए - नीलाञ्जिक,रघु,कोष्टु, शतजित,सहस्त्रजित (सबसे जेष्ठ)[17]

हैहय,रेणुहय,हय

धर्मनेत्र → संहत → महिमा → भद्रसेन → दुर्गम → कनक

कृतवीर्य,कृताग्नि, करवीरक,कृतौजा

अर्जुन

सौ पुत्र- शूरसेन, शूर, धृष्टोक्त, कृष्ण, जयध्वज (जयध्वज अवन्ति देश के शासक थे) ये पांच प्रमुख

तालजंघ

इसके अनेक पुत्र हुए जो तालजंघ नाम से ही प्रसिद्ध हुए।[18]

---

[12] अग्निपुराण २७२/३६-३९

[13] अग्निपुराण २७३/१-१४

[14] आयुर्दृढायुरश्वायुर्धनायुर्धृतिमान् वसुः।
दिविजातः शतायुश्च सुषुवे चोर्वशी नृपान्॥ -अग्निपुराण २७३/१५

[15] अग्निपुराण २७३/१६-१७

[16] अग्नि पुराण २७३/२०-२३

[17] यदोरासन्पञ्च पुत्रा ज्येष्ठस्तेषु सहस्त्रजित्।
नीलाञ्जिको रघुः कोष्टुः शतजिच्च सहस्त्रजित्॥ अग्निपुराण २७४/१

[18] अग्निपुराण २७४/२-१०

विष्णु पुराण में वैवस्वत मनु वंश-

विष्णु पुराण के तृतीय अंश में १४ मन्वन्तर के क्रम में वैवस्वत मनु का वर्णन किया गया है। इसके **देवता** आदित्य, वसु, और रूद्र थे। इस मन्वन्तर में **इन्द्र** पुरन्दर है। वसिष्ठ, काश्यप, अत्रि, जमदाग्नि, गौतम, विश्वमित्र, भारद्वाज **सप्तर्षि** हैं।[19]

विष्णु पुराण के चतुर्थ अंश के प्रथम अध्याय में वैवस्वत मनु वंश का वर्णन किया गया है। इसमें कहा गया है कि सकल संसार के आदि कारण भगवान विष्णु है। उन ब्रह्मरूप भगवान विष्णु के मूर्त रूप ब्रह्माण्डमय हिरण्य गर्भ भगवान ब्रह्मा जी प्रकट हुए। ब्रह्मा जी के दायें अंगूठे से दक्षप्रजापति हुए इनसे अदिति, अदिति से विवस्वान इनसे मनु का जन्म हुआ।[20]

मनु के १. इक्ष्वाकु २.नृग ३.धृष्ट ४.शर्याति ५.नरिष्यन्त ६. प्रांशु ७. नाभाग ८.दिष्ट ९. करूष १०.पृषध्र नामक दस पुत्र हुए।[21] आगे इस पुराण में पुत्र प्राप्ति की इच्छा से मित्रावरूण याग, उनसे इला नामक कन्या और उसके पुत्रों का वर्णन किया गया है।[22] जैसा अग्नि पुराण में वर्णन किया गया है। तत्पश्चात मनु पुत्रों का वर्णन करते हुए बताया गया है कि –

१. **पृषध्र** गुरू की गाय का वध करने के कारण शूद्र हो गया।

२. **करूष** से कारूष नामक क्षत्रियगण उत्पन्न हुए।[23]

३. **दिष्ट** का पुत्र नाभाग जो कि वैश्य था उसका पुत्र बलन्धन हुआ

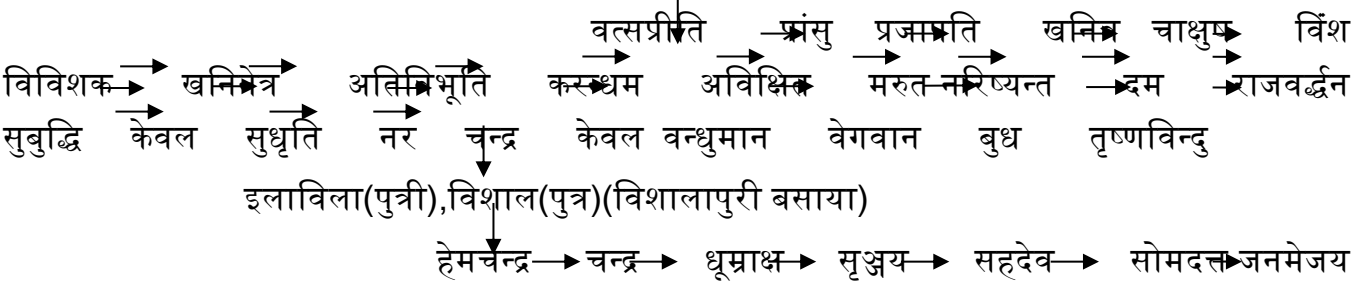

४.मनुपुत्र **शर्याति** से सुकन्या नामक कन्या हुई। जिसका च्यवन नामक ऋषि के साथ विवाह हुआ। और अनर्त नामक पुत्र उत्पन्न हुआ। अनर्त के १०० पुत्र हुए उनमें रैवत सबसे बड़ा था।(ककुधी नाम से भी प्रसिद्ध) रेवती नामक कन्या इसका विवाह बलराम से हुआ।[25]

---

[19] विष्णुपुराण ३/१/३१-३२

[20] विष्णुपुराण ४/१/५-६

[21] इक्ष्वाकुश्च नृगश्चैव धृष्ट: शर्यातिरेव च।
नरिष्यन्तश्च विख्यातो नाभागोऽरिष्टएव च॥ विष्णुपुराण ३/१/३३

[22] विष्णुपुराण ४/१/८-१६

[23] विष्णुपुराण ४/१/१७-१८

[24] विष्णुपुराण ४/१/१९-६१

[25] विष्णुपुराण४/१/६२-६६

५. मनुपुत्र **धृष्ट** के धार्ष्टक नामक क्षत्रिय उत्पन्न हुए।[26]

६. **नाभाग** के नाभाग नामक पुत्र हुए।

अम्बरीष → विरूप → पृषदश्व → रथीतर[27]

७.छीकनें के समय मनु की घाणेन्द्रिय से **इक्ष्वाकु** नामक पुत्र का जन्म हुआ। इक्ष्वाकु के १०० पुत्र हुए। जिनमें विकुक्षि, निमि और दण्ड प्रधान थे। इनमें से शकुनि आदि ५० पुत्र उत्तरापथ के तथा शेष दक्षिणा पथ के स्वामी हुए।[28] विष्णु पुराण में विकुक्षि के विषय में एक कथा दी गई है कि इक्ष्वाकु ने अष्टकाश्राद्ध करने के लिए विकुक्षि से श्राद्ध योग्य मांस लाने को कहा। वन में शिकार के समय भूख लगने के कारण विकुक्षि ने खरगोश का मांस खा लिया और बचा हुआ मांस लाकर पिता को दे दिया। इस पर रूष्ट होकर इक्ष्वाकु ने उसे त्याग दिया। शशक को खाने के कारण उसे शशाद भी कहा गया। पिता की मृत्यु के पश्चात इसने पृथ्वी का धर्मानुसार शासन किया[29]। इसका पुत्र पुरञ्जय हुआ[30] इसका दूसरा नाम कुकुत्स्थ भी था। ककुत्स्थ के अनेना हुए।

पृथु → विष्टराश्व → चान्द्रयुवनाश्व → शावस्त (शावस्तीपुरी बसायी)[31] वृहदश्व → कुवलयाश्व(धुन्धु को मारने वाला)।

कुवलयाश्व के २१ सहस्त्र पुत्र हुए(धुन्धु को मारने के लिए युद्ध में जाने के कारण केवल दृढाश्व, चन्द्राश्व,कपिलाश्व बचे)[32]

दृढाश्व के हर्यश्व हुए।

निकुम्भ → अमिताश्व → कृशाश्व → प्रसेनजित → युवनाश्व → मान्धाता

मान्धाता के पुरूकुत्स,अम्बरीष, मुचुकुन्द नामक तीन पुत्र और ५० कन्यायें हुईं।[33] जिनका विवाह सौभरि ऋषि से हुआ।

अम्बरीष का पुत्र युवनाश्व हुआ। → हारीत → अंगिरा।[34]

पुरूकुत्स का पुत्र त्रसदस्यु हुआ।[35]

अनरण्य → पृषदश्व → हर्यश्व → हस्त → सुमना त्रिधन्वा त्रय्यारूणि सत्यव्रत(त्रिशंकु नाम से भी प्रसिद्ध)[36] → हरिश्चन्द्र → रोहिताश्व → हरित → चञ्चु

---

[26] धृष्टस्यापि धार्ष्टकं क्षत्रमभवत्। ४/२/४

[27] विष्णुपुराण ४/२/५-१०

[28] विष्णुपुरान ४/२/११-१४

[29] विष्णुपुराण ४/२/१५-१९

[30] शशादस्य तस्य पुरञ्जयो नाम पुत्रोऽभवत्। -विष्णुपुराण ४/२/२०

[31] विष्णुपुराण ४/२/३२-३७

[32] विष्णुपुराण ४/२/३८-४२

[33] विष्णुपुराण २/२/४३-६८

[34] विष्णुपुराण ४/३/२-३

[35] पुरुकुत्सो नर्मदायां त्रसदस्युमजीजनत्। -विष्णुपुराण ४/३/१६

विजय और वसुदेव

रुरुक → वृक →

बाहु[37] → सगर (इसकी की दो पत्नियां थीं पहली पत्नी केशिनी से असमञ्जस नामक पुत्र उत्पन्न हुए। दूसरी पत्नी सुमति से साठ हजार पुत्र उत्पन्न हुए।[38]

अंशुमान[39]

दिलीप → भगीरथ → सुहोत्र →

श्रुति → नाभाग → अम्बरीष → सिन्धुद्वीप → अयुताय्यु → ऋतुपर्ण[40] → सर्वकाम → सुदास → सौदास[41] → अश्मक → मूलक नामक १२ पुत्र → दशरथ → इलिविल → विश्वसह → खट्वांग → दीर्घवाहु → रघु → अज → दशरथ → राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न नामक चार पुत्र हुए।[42]

कुश और लव

अंगद और चन्द्रकेतु

भरत के तक्ष और पुष्कल नामक दो पुत्र हुए।

शत्रुघ्न के सुबाहु और शूरसेन नामक दो पुत्र हुए।[43]

कुश के अतिथि हुए।

निषध → अनल → नभ → पुण्डरीक → क्षेमधन्वा → देवानीक → अहीनक → रूह → पारियात्रक → देवल → वच्चल → उक्क → वज्रनाभ → शंखण → युविताश्व → विश्वसह → हिरण्यनाभ → पुण्य → ध्रुवसन्धि → सुदर्शन → अग्निवर्ण → शीघ्रग → मरू → प्रसुश्रुत → सुसन्धि → अमर्ष → महस्वान → विश्वभव → वृहद्वल।[44]

इक्ष्वाकु का जो **निमि** नामक पुत्र था उसका वंश इस प्रकार है-

जनक (विदेह और मिथि नाम से भी प्रसिद्ध)।

उदावसु → नन्दिवर्द्धन → सुकेतु → देवरात → वृहदुक्थ → महावीर्य → सुधृति → धृष्टकेतु → हर्यश्व → मनु → प्रतिक → कृतरथ → देवमीढ → विबुध → महाधृत्ति → कृतरात → महारोभा → सुवर्णरोमा → ह्रस्वरोमा → सीरध्वज[45] (सीरध्वज पुत्र कामना से भूमि जोत रहे थे इसी

---

[36] विष्णुपुराण ४/३/१७-२१

[37] विष्णुपुराण ४/३/२५-२६

[38] विष्णुपुराण ४/४/५-६

[39] विष्णुपुराण ४/४/७

[40] विष्णुपुराण ४/४/३६-३७

[41] विष्णुपुराण ४/४/३८-४०

[42] विष्णुपुराण ४/४/७१-८७

[43] विष्णुपुराण ४/४/१०४

[44] विष्णुपुराण ४/४/१०५-११२

[45] विष्णुपुराण ४/५/२०-२७

समय हल के अग्रभाग से उनके सीता नाम की कन्या उत्पन्न हुई। सीरध्वज के भाई सांकाश्यनरेश कुशध्वज थे।) सीरध्वज का पुत्र भानुमान हुआ।

शतद्युम्न → शुचि → ऊर्जनामा → शतध्वज → कृति
अञ्जन → कुरुजित् → अरिष्टनेमि → श्रुतायु → सुपार्श्व → सृञ्जय → क्षेमावी → अनेना → भौमरथ
सत्यरथ → उपगु → उपगुप्त → स्वागत → स्वानन्द → सुवर्चा → सुपार्श्व → सुश्रुत → जय
विजय → ऋत → सुनय → वीतहत्य → धृति → बहुलाश्व → कृति।[46] कृति से ही जनक वंश की समाप्ति हो जाती है।

ब्रह्म पुराण में वैवस्वत मनु वंश

ब्रह्म पुराण में १४ मन्वन्तरों के वर्णन क्रम में वैवस्वत मनु का वर्णन किया गया है। इसके **देवता** आदित्य, वसु, साध्य, विश्वेदेव, मरुद्गण, अश्विनीकुमार और रूद्र थे। इस मन्वन्तर में **इन्द्र** पुरन्दर है। वसिष्ठ, काश्यप, अत्रि, जमदाग्नि, गौतम, विश्वमित्र, भारद्वाज **सप्तर्षि** हैं। इस पुराण में मनु के नौ पुत्र बताये गये हैं, जिनके नाम इस प्रकार हैं –इक्ष्वाकु, नाभाग, धृष्ट, शर्याति, नरिष्यन्त, प्रांशु, अरिष्ट, करुष और पृषध्र।[47]

१. **नरिष्यन्त** के पुत्र शक कहलाये।

२. **नाभाग** के पुत्र राजा अम्बरीष हुए।[48]

३. मनुपुत्र **धृष्ट** के धार्ष्टक नामक क्षत्रिय उत्पन्न हुए।

४. **करूष** से कारूष नामक क्षत्रियगण उत्पन्न हुए।

५. **प्रांश** के एकमात्र पुत्र प्रजापति कहलाये।[49]

६.मनुपुत्र **शर्याति** से सुकन्या नामक कन्या जिसका विवाह च्यवन नामक ऋषि के साथ हुआ और अनर्त नामक पुत्र उत्पन्न हुआ। अनर्त के रैव नाम का पुत्र उत्पन्न हुआ। जिसे अनर्त देश का राज्य प्राप्त हुआ। जिसकी राजधानी कुशस्थली थी। रैव का पुत्र रैवत हुआ।[50]

७. **पृषध्र** गुरू की गाय का वध करने के कारण शूद्र हो गया।[51]

८.छीकनें के समय मनु की घाणेन्द्रिय से **इक्ष्वाकु** नामक पुत्र का जन्म हुआ। इक्ष्वाकु के १०० पुत्र हुए। विकुक्षि इनमें सबसे बड़ा था।[52] इसके शकुनि आदि पांच सौ पुत्र हुए।[53] विकुक्षि का दूसरा नाम

---

[46] विष्णुपुराण ४/५/२९-३२

[47] मनोर्वैवस्वतस्यासन्पुत्रा वै नव तत्समाः।
इक्ष्वाकुश्चैव नाभागो धृष्टः शर्यातिरेव च॥
नरिष्यन्तश्च षष्ठो वै प्रांशू रिष्टश्च सप्तमः।
करुषश्च पृषध्रश्च नवैते मुनिसत्तमाः॥ -ब्रह्मपुराण ७/१-२

[48] नारिष्यन्ताः शकाः पुत्रा नाभागस्य तु भो द्विजाः।
अम्बरीषोऽभवत्पुत्रः पार्थिवर्षभसत्तमः॥ -ब्रह्मपुराण ७/२४

[49] ब्रह्मपुराण ७/२५-२६

[50] ब्रह्मपुराण ७/२७-२९

[51] ब्रह्मपुराण ७/४३

शशाद भी था।

ककुत्स्थ → अनेना → पृथु → विष्टराश्व → आर्द्र → युवनाश्व → श्रावस्त (शावस्तीपुरी बसायी) वृहद्रथ → कुवलयाश्व (धुन्धु को मारने वाला)।[54] कुवलयाश्व के १०० पुत्र हुए।[55] दृढाश्व उनमें सबसे ज्येष्ठ था। अन्य दो पुत्र चन्द्राश्व,कपिलाश्व हुए। दृढाश्व के हर्यश्व हुए।

निकुम्भ संहताश्व अकृशाश्व और कृशाश्व नामक दो पुत्र और हेमवती नामक कन्या हुई।

प्रसेनजित → युवनाश्व → मान्धाता → पुरुकुत्स और मुचुकुन्द नामक दो पुत्र त्रसदस्यु → सम्भूत → त्रिधन्वा → त्रय्यारूणि → सत्यव्रत[56] → हरिश्चन्द्र → रोहित → हरित → चञ्चु → विजय → रुरुक → वृक → बाहु → सगर।[57]

वायु पुराण में वैवस्वत मनु वंश

वायु पुराण के ८६वें अध्याय से ८८वें अध्याय तक वैवस्वत मनु वंश का वर्णन किया गया है। इस पुराण में वैवस्वत मनु के नौ पुत्रों का नामोल्लेख है। जो इस प्रकार है -मनु, इक्ष्वाकु, नहुष, धृष्ट, शर्याति, नरिष्यन्त, प्रांशु, करुष और पृषध्र।[58]

१. **पृषध्र** गुरू च्यवन की गाय का वध करने के कारण शूद्र हो गया।[59]

२. **करूष** से कारूष नामक क्षत्रियगण उत्पन्न हुए।[60]

३.मनुपुत्र **शर्याति** से सुकन्या नामक कन्या जिसका विवाह च्यवन नामक ऋषि के साथ हुआ और अनर्त नामक पुत्र उत्पन्न हुआ। अनर्त के रेव नाम का पुत्र उत्पन्न हुआ। रेव के सौ पुत्र हुए जिसमें रैवत सबसे ज्येष्ठ था।[61]

४. नाभाग के नाभाग नामक पुत्र हुए।

अम्बरीष → विरूप → पृषदश्व → रथीतर → प्रवर।[62]

५.मनुपुत्र नाभाग अरिष्ट का पुत्र भलन्दन हुआ।

---

[52] ब्रह्मपुराण ७/४४-४५

[53] ब्रह्मपुराण ७/४६

[54] ब्रह्मपुराण ७/५१-५५

[55] ब्रह्मपुराण ७/५७

[56] ब्रह्मपुराण ७/८८-९७

[57] ब्रह्मपुराण ८/२४-३०

[58] इक्ष्वाकुर्नहुषश्चैव धृष्ट: शर्यातिरेव च।
नरिष्यन्तस्तथा प्रांशुर्नाभागोऽरिष्ट एव च॥
करुषश्च पृषध्रश्च नवैते मानवा: स्मृत:। -वायुपुराण ८५/४

[59] वायुपुराण ८६/१

[60] वायुपुराण ८६/२

[61] वायुपुराण ८६/२३-२५

[62] वायुपुराण ८८/५-७

प्रांशु → प्रजाति → खनित्र → क्षुप → विंश → विविंश → खनिनेत्र करन्धम → आविक्षित → मनुन्त → नरिष्यन्त → दम राष्ट्रवर्धन → सुधृती नर → केवल बन्धुमान → सज्जा वेगवान् → बुध तृणविन्दु कन्या द्रविडा → विशाल → हेमचन्द्र सुचन्द्र धूम्राश्व सृञ्जय सहदेव कृशाश्व सोमदत्त जनमेजय → प्रमति।[63] →

६.छीकने के समय मनु की घाणेन्द्रिय से इक्ष्वाकु नामक पुत्र का जन्म हुआ। इक्ष्वाकु के १०० पुत्र हुए। विकुक्षि इनमें सबसे बड़ा था। अन्य दो पुत्र नेमि और दण्ड थे। विकुक्षि के शकुनि आदि पांच सौ पुत्र हुए।[64] विकुक्षि का दूसरा नाम शशाद भी था। विकुक्षि का पुत्र ककुत्स्थ हुआ।

अनेना ↙ पृथु वृषदश्व → अन्ध्र यवनाश्व → श्रावस्त (श्रावस्तीपुरी बसायी) वृहद्रश्व → कुवलयाश्व(धुन्धु को मारने वाला)।[65] कुवलयाश्व के २१सहस्त्र पुत्र हुए परन्तु धुन्धु को मारते समय युद्ध में सब मारे गये केवल तीन पुत्र बचे। दृढाश्व उनमें सबसे ज्येष्ठ था।अन्य दो पुत्र दृढाश्व और भद्राश्व थे। दृढाश्व के हर्यश्व हुए।

निकुम्भ → संहताश्व → कृशाश्व और अक्षयाश्व नामक दो पुत्र एवं दूसरी पत्नी हेमवती से प्रसेनजित् हुए।

युवनाश्व → मान्धाता → पुरुकुत्स, अम्बरीष और मुचुकुन्द नामक तीन पुत्र हुए।

त्रसदस्यु → सम्भूत → अनरण्य → त्रसदश्व → हर्यश्व → वसुमत त्रिधन्वा → त्रय्यारूण → सत्यव्रत → हरिश्चन्द्र → रोहित → हरित → चञ्चु → विजय और सुदेव। विजय का पुत्र रुरुक हुआ। रुरुक के → वृतक → बाहु → सगर।[66] सगर की पहली पत्नी से असमञ्जस नामक पुत्र हुआ और दूसरी पत्नी सुमति से ६० हजार पुत्र उत्पन्न हुए।[67] असमञ्जस का पुत्र अंशुमान हुआ।

दिलीप → भगीरथ → श्रुत → नाभाग → अम्बरीष → सिन्धुद्वीप → आयुतायु → ऋतुपर्ण → सर्वकाम सुदास → सौदास → अश्मक मूलक शतरथ एडिविड दिलीप दीर्घबाहु रघु अज दशरथ → राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न नामक चार पुत्र हुए।[68]

राम के पुत्र कुश और लव हुए।

अतिथि → निषध → नल → नभ → पुण्डरीक → क्षेमधन्वा → देवानीक अहीनगु पारिपात्र → दल → बल → औंक → बज्रनाभ → शंखन → ध्युषिताश्व → विश्वसह → हिरण्यनाभ वशिष्ठ → पुष्प ध्रुवसन्धि → सुदर्शन → अग्निवर्ण → शीघ्र मनु → प्रसुश्रुत → सुसंधि → मर्ष सहस्वान् → विश्रुतवान् → वृहद्बल।[69] → → →

---

[63] वायुपुराण ८६/३-२२

[64] वायुपुराण ८८/९-१०

[65] वायुपुराण ८८/२४-२८

[66] वायुपुराण ८८/११७-१२३

[67] वायुपुराण ८८/१५६-१६१

[68] वायुपुराण ८८/१६६-१८४

[69] वायुपुराण ८८/१९८-२१२

इसी प्रकार भागवत, मार्कण्डेय, मत्स्य, पद्म आदि पुराणों में भी वैवस्वत मनु वंश का विस्तृत विवरण प्राप्त होता है, जो इस वंश की महत्ता को सिद्ध करता है। पुराणों में चौदह मन्वन्तरों में स्वायभुव मनु वंश और वैवस्वत मनु का ही विस्तृत विवेचन किया गया है। यद्यपि पुराणों में वर्णित वैवस्वत मनु वंश में भिन्नता भी है जैसे- कुछ पुराणों में मनु के नौ पुत्र बताये गये हैं कुछ पुराणों में दस पुत्र, इसी प्रकार कुछ पुराणों में इक्ष्वाकु के पुत्र विकुक्षि के सौ पुत्र बताये गये हैं तो कुछ पुराणों में २१ सहस्त्र पुत्रों का वर्णन है। और भी स्थानों पर भिन्नतायें हैं परन्तु इनमें काफी समानतायें भी हैं। यदि सभी पुराणों को मिलाकर मनु वंश की एक वंशावली बनायी जाय तो यह काफी उपयोगी सिद्ध हो सकती है।

सन्दर्भ ग्रंथ- सूची

1.विष्णुपुराण – (मूल पाठ हिन्दी – अनुवाद), अनुवादक: मुनिलाल गुप्त, गीता प्रेस, गोरखपुर, १९६५.

२.अग्निपुराण, गीता प्रेस, गोरखपुर

३.ब्रह्म पुराण, गीता प्रेस गोरखपुर

४.वायु पुराणम्, आनन्दाश्रम मुद्रणालय, १९०५

५.भविष्य पुराण, वेंकटेश्वर प्रेस, बाम्बे, १९५०.

६.गरुड़ पुराण गीता प्रेस गोरखपुर

७.मत्स्य पुराण पं. श्री राम शर्मा आचार्य, संस्कृति संस्थान, बरेली.

८.भागवत पुराण, गीता प्रेस गोरखपुर

९. विष्णुपुराण तत्त्वदर्शन (संस्कृत – हिन्दी), किशोर विद्या निकेतन, वारणसी, १९८६.

१०.पुराण विमर्श, बलदेव उपाध्याय, चौखम्भा विद्याभवन, वाराणसी,१९७८.

११.इतिहास पुराण का अनुशीलन, रमाशंकर भट्टाचार्य,वाराणसी, १९३३.

१२.पुराण परिशीलन, गिरिधर शर्मा चतुर्वेदी, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, पटना, १९७०.

१३.पुराण इतिहास विमर्श, प्रो. आर. आई. नानावती, भारतीय विद्या प्रकाशन, दिल्ली, १९७८.